सामाजिक कौशलों पर टोली-खेल प्रतियोगिता का प्रभाव

अपर्णा मिश्रा[1], सुनील कुमार जोशी[2]
[1]शोध छात्रा, अध्यापक शिक्षा विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
[2]प्रोफ़ेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर

संक्षेपिका: यह शोध पत्र प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 5 के विद्यार्थियों पर टोली-खेल प्रतियोगिता का सामाजिक कौशलों पर प्रभाव मापने के उद्देश्य से किया गया है। अर्द्ध-प्रायोगिक अध्ययन में 42 विद्यार्थियों को दो समूहों (प्रायोगिक और नियंत्रित) में विभाजित किया गया। प्रायोगिक समूह के 20 विद्यार्थियों को टोली-खेल प्रतियोगिता के माध्यम से पढ़ाया गया, जबकि नियंत्रित समूह के 22 विद्यार्थियों को परंपरागत विधि से शिक्षा दी गई। परिणामस्वरूप, यह पाया गया कि टोली-खेल प्रतियोगिता द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों में अधिक सुधार हुआ। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सहयोगी अधिगम की यह विधि सामाजिक कौशलों के विकास में प्रभावी है और इसे परंपरागत विधियों से अधिक सफल पाया गया।

बीज़ शब्द: सामाजिक कौशल, टोली खेल प्रतियोगिता, प्राथमिक शिक्षा, सहयोगी अधिगम

प्रस्तावना

सामाजिक कौशल व्यवहार के ऐसे घटक है जो विभिन्न प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों में अनुकूलन करने में व्यक्ति की सहायता करते हैं तथा सामान्य जन में संतुलित रहने के लिए उसे क्षमतावान बनाते हैं। वाकर एवं अन्य (1992) के अनुसार सामाजिक कौशल क्षमताओं का वह समुच्चय है जो सकारात्मक सामाजिक संबंध बनाने तथा उसे बनाए रखने एवं सामाजिक वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से समायोजित होने लायक बनाता है। जीवन में अच्छे निर्णय लेने में, दूसरों से क्या और कैसे बात किया जाए, किस तरह समाज में अच्छे संबंध बनाए रखें जाए,आदि में सामाजिक कौशल हमारी सहायता करते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो एक अच्छा नागरिक बनाने में सामाजिक कौशल की भूमिका महत्वपूर्ण है विद्यालय का दायित्व अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है। विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल की वृद्धि कैसे की जाए यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है।

वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य सहयोगी अधिगम के एक प्रकार टोली-खेल प्रतियोगिता का बच्चों के सामाजिक कौशलों पर प्रभाव को जानना है सहयोगी अधिगम के टोली-खेल प्रतियोगिता विधि को सामाजिक संबद्धता के दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है। समूह के सदस्य एक दूसरे का ध्यान रखते हैं तथा समूह के सदस्य की सफलता चाहते हैं। सहयोगी अधिगम में यह स्थिति सामाजिक अन्तःनिर्भरता के कारण उत्पन्न होती है और समूह के सदस्यों में एक होने का भाव उत्पन्न करती है। ऐसी स्थिति में वह विषय वस्तु की व्याख्या एक दूसरे से करते हैं, सहायता करते हैं, तथा सफलता के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

सहयोगी अधिगम की इस विधि में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व एवं सामूहिक पुरस्कार अन्तर्निहित है। समूह के एक सदस्य की सफलता दूसरे सदस्यों की सफलता पर निर्भर करती है। पुरस्कार प्राप्त करने के लिए एक दूसरे की सहायता करते हुए सभी सदस्य मिलकर एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं क्योंकि सहयोगी पुरस्कार संरचना ऐसी स्थिति उत्पन्न करती है जहां समूह के सदस्य व्यक्तिगत लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकते हैं जब समूह सफल हो (जॉनसन एंड जॉनसन, 1992; स्लाविन, 1983) । इसके विपरीत परम्परागत विधि में एक की असफलता, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दूसरे की सफलता की संभावना को

बढ़ाती है (जोशी और भटनागर, 2015)। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी दूसरों से अपने विचारों को साझा नहीं करते तथा चर्चा करने से बचते रहते हैं। सम्भवतया इन्ही कारणों से अपेक्षा की जाती है कि टोली-खेल प्रतियोगिता विधि द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों में सामाजिक कौशलों की वृद्धि होगी।

वर्तमान अध्ययन अर्द्ध-प्रायोगिक प्रकार का है जिसके अंतर्गत पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण असमान समूह अभिकल्प का उपयोग किया गया है। अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्पों में भी नियंत्रण होता है परन्तु प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूहों में विषयी को यादृच्छिक रूप से बांटा नहीं जा सकता है | उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के बेसिक स्कूल के कक्षा पाँच के विद्यार्थी इस अध्ययन की जनसंख्या थी। यह अध्ययन कक्षा के 42 विद्यार्थियों पर किया गया था। ये विद्यार्थी प्राथमिक विद्यालय अहिलादपुर एवं प्राथमिक विद्यालय अब्दुल्लापुर के कक्षा पाँच के विद्यार्थी थे। यह वे विद्यार्थी थे जो कक्षा में नियमित रूप से आने वाले थे। डाहले (1994) का सुझाव है कि एक आदर्श सहयोगात्मक अधिगम वाली कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या 15-20 होनी चाहिए। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकांश विद्यार्थी निम्न सामाजिक-आर्थिक समूह से थे। विद्यालयों के चुनाव में विद्यालय से मिलने वाले सहयोग तथा अपनी सुविधा का भी ध्यान रखा गया। सामाजिक कौशलों के मापन हेतु शोधकर्ताओं द्वारा निर्मित सामाजिक कौशल मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें पांच पक्ष पर आधारित कुल 42 पद थे। इस मापनी का प्रशासन प्रयोग के पहले तथा प्रयोग के बाद किया गया। विद्यार्थियों को टोली खेल प्रतियोगिता द्वारा 16 सप्ताह तक कक्षा 5 के लिए निर्धारित हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'कलरव' के सात पाठों का अध्यापन किया गया। अर्द्ध-प्रायोगिक अध्ययन में 42 विद्यार्थियों को दो समूहों (प्रायोगिक और नियंत्रित) में विभाजित किया गया। प्रायोगिक समूह के 20 विद्यार्थियों को टोली-खेल प्रतियोगिता के माध्यम से पढ़ाया गया, जबकि नियंत्रित समूह के 22 विद्यार्थियों को परंपरागत विधि से शिक्षा दी गई। प्रयोग के पहले प्रकाशित मापनी के अंकों को सह प्रसारक के रूप में प्रश्न उपयोग करके प्रसारण सह विश्लेषण द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है |

परिणाम

टोली-खेल प्रतियोगिता एवं परम्परागत रूप से पढ़ाये गये विद्यार्थियों की संख्या एवं सामाजिक कौशलों के मध्यमान को तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया है

तालिका संख्या 1: पश्च एवं पूर्व परीक्षण के अंको के योग एवं मध्यमान को दर्शाती तालिका

समूह	संख्या	पश्च-परीक्षण		पूर्व-परीक्षण	
		Y (अंकों का योग)	Y1 (मध्यमान)	X (अंकों का योग)	X1 (मध्यमान)
प्रायोगिक	20	2102	105.10	1697	84.85
नियंत्रित	22	1510	68.64	1454	66.00
योग	42	3612	86.00	3151	75.02

सामाजिक कौशलों की उपलब्धि पर पूर्व-परीक्षण के अंकों को सह- प्रसारक के रूप में उपयोग करके प्रसरण-सह-विश्लेषण को संपन्न किया गया। इस विश्लेषण के परिणाम को तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2: - सामाजिक कौशलों के लिए प्रसरण-सह-विश्लेषण का परिणाम

विचलन के स्रोत	df	SSx	SSy	SSxy	SSy.x	MSy.x

समूहों के मध्य	1	3686.63	13929.10	7165.97	3376.41	3376.41
समूहों के बीच	39	25210.37	15614.9	17694.03	4780.61	122.58

Fy.x = 27.54 , þ < 0.05

तालिका संख्या 2 को देखने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों को पढ़ाने से पहले सामाजिक कौशल परीक्षण पर प्रयोगिक एवं नियंत्रित समूहों का मध्यमान क्रमशः 84.85 एवं 66.00 है। शिक्षण कार्य करने के बाद प्रयोगिक समूह का मध्यमान 105.10 तथा नियंत्रित समूह का मध्यमान 68.64 है। इसे देखने से यह स्पष्ट है कि टोली-खेल प्रतियोगिता विधि द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों की सामाजिक कौशलों में उपलब्धि परम्परागत विधि से पढ़ाये गये विद्यार्थियों से अधिक है। यह जानने के लिए कि इन दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर सार्थक है अथवा नहीं, प्रसरण-सह-विश्लेषण का प्रयोग किया गया। प्रसरण-सह-विश्लेषण के परिणाम को तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत किया गया है। तालिका संख्या 2 से ज्ञात होता है कि F का मान 27.54 है जो स्वतंत्रता के अंश 1, 39 पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना की टोली-खेल प्रतियोगिता एवं परम्परागत विधि से पढ़ाये गये विद्यार्थियों के सामाजिक कौशलों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर संयोगवश नहीं है। दोनों समूहों के लिए सामाजिक कौशलों हेतु समायोजित मध्यमानों की गणना की गयी । इन समायोजित मध्यमानों को तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या: 3- सामाजिक कौशलों हेतु समायोजित मध्यमान

समूह	संख्या	समायोजित मध्यमान
प्रायोगिक नियंत्रित	20 22	98.21 74.95

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है की टोली-खेल प्रतियोगिता विधि द्वारा पढ़ाये गये कक्षा 5 के विद्यार्थियों का मध्यमान 98.21 है, जबकि पारम्परिक विधि द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों का मध्यमान 74.95 है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामाजिक कौशलों की वृद्धि हेतु टोली-खेल प्रतियोगिता विधि परम्परागत विधि की तुलना में अधिक प्रभावी है।

इस अध्ययन के परिणाम लोपेज-मंडेजार एवं पास्टर (2017), गस्की एवं पिगॉट (1988), हॉलमार्क (1995), स्टेंडलर एवं अन्य (1951) एवं टाउंस एंड ग्रान्ट (1997) के परिणामों के अनुरूप है जहां इन शोधकर्ताओं ने सामाजिक-संवेगात्मक पक्षों पर सहयोगी अधिगम का सकारात्मक परिणाम पाया था।

सहयोगी अधिगम विधि के दौरान जिस तरह की कक्ष संरचना होती है उसके आधार पर वर्तमान परिणामों की व्याख्या की जा सकती है। टोली-खेल प्रतियोगिता विधि के दौरान विद्यार्थी अपने समूह में आपस में चर्चा और अंतःक्रिया करते हैं, जबकि परम्परागत विधि में कक्षा कक्ष के दौरान आपसी अंतःक्रिया लगभग अनुपस्थित होती है। सहयोगी अधिगम में प्रत्येक समूह एक मजबूत सामाजिक इकाई बन जाता है। समूह के सदस्य एक दूसरे का ख्याल रखते हैं तथा उसे सफलता के लिए प्रोत्साहित व अभिप्रेरित करते हैं। उन्हें पता होता है कि सभी साथी एक साथ ही सफल हो सकते हैं तथा परम्परागत विधि की तरह कोई एक व्यक्ति अलग से सफल नहीं हो सकता है। समूह को सफल बनाने की इस प्रक्रिया में विचारों का सहभाजन करते हैं चूकि समूह विषमांगी होता है तो कम क्षमता वाले विद्यार्थी का सभी सदस्य ख्याल रखते हैं। विचार-विमर्श के दौरान किसी भी समूह में ऐसी स्थितियां उत्पन्न होती है जहां किसी एक या अधिक के विचार से अन्य सहमत ना हों। अपनी बात को समझने के लिए अथवा अपना

पक्ष रखने के लिए सदस्य को संयम के साथ बर्ताव करना होता है और सभी सदस्य इसी प्रकार व्यवहार करते हुए मत-भिन्नता की स्थिति से निकलकर एक निर्णय पर पहुंचते हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य एक होता है। इस प्रक्रिया में उस सामाजिक समूह में कई प्रकार के कौशलों यथा - संवाद, देखभाल, सहभाजन, मत-भिन्नता निवारण आदि का विकास होता है, जबकि परम्परागत शिक्षण विधि में इस प्रकार के अवसर प्राप्त नहीं होते। संभवतया यही कारण रहा हो कि सहयोगी अधिगम के टोली-खेल प्रतियोगिता विधि द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों में सामाजिक कौशलों का विकास परम्परागत विधि से पढ़ाये गये विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक हुआ हो। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि परम्परागत शिक्षण विधि की तुलना में सहयोगी अधिगम की टोली-खेल प्रतियोगिता विधि सामाजिक कौशलों के विकास में अधिक प्रभावी है।

संदर्भ ग्रंथ

[1] Dahle, A.M. (1994). *Cooperative learning classroom research.* Retrived from http://alumni.media.mit.edu/andyd/mindset/design /clc _rsch.html

[2] Guskey, T.R. and Pigott, T.D. (1988). Research on group-based mastery learning programs: a meta analysis. *Journal of Educational Research* 81(4),197-216

[3] Hallmark, B.W. (1995). The effect of group composition on elementary students' achievement, self concepts and interpersonal perceptions in cooperative learning groups. *Dissertation Abstract International*, 56(1),143-A.

[4] Johnson, D.W. and Johnson, R.T. (1992). Positive interdependence: Key to effective cooperation. In R.Hertz-Lazarowitz and N.Miller (ed.), *Interaction in cooperative groups: The theoretical anatomy of group learning*. New York: Cambridge University press, pp.174 – 199.

[5] Joshi, S.K. & Bhatnagar, S. (2015). Effect of Cooperative Learning Oriented Teaching on the Academic Achievement of Secondary Level Students. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 3 (17): 3015-302

[6] Stendler, C.,Damrin, D. and Haines, A.(1951). Studies in cooperation and competition: I, The effect of working for groups and individuals reward on the social climate of children's groups. *Jl. of Genetic Psychology*, 79, 173-179.

[7] Towns, M.H. and Grent, E.R. (1990). "I believe I will go out of his class actually knowing something": Cooperative learning activities in physical chemistry. *Jl. of Research in Science Teaching*, 34(8),819-835..

[8] Slavin, R.E. (1983). *Cooperative learning*. New York: Longman.

[9] Walker, H. M., Irvin, L. K., Noell, J., & Singer, G. H. S. (1992). A construct score approach to the assessment of social competence: Rationale, technological considerations, and anticipated outcomes. *Behavior Modification*, 16, 448–474.